मीरां ने अपने कर्म से प्रेम की प्रतिष्ठा स्थापित की : प्रोफेसर अर्जुनदेव चारण

निहारिका टाइम्स
www.niharikatimes.com
नरोत्तम जारोड़िया

कुरड़ायां। श्रीमदभागवत गीता में भक्तियोग को ज्ञान एवं कर्मयोग से बड़ा बताया है क्योंकि इसमें आत्मा की प्रतिष्ठा प्रेम के रूप में होती है। मीरां ने अपने कर्म से सकल विश्व में प्रेम की प्रतिष्ठा स्थापित की यह विचार ख्यातनाम कवि-आलोचक प्रोफेसर (डॉ) अर्जुनदेव चारण ने साहित्य अकादेमी एवं श्री चतुर्भुज शिक्षा समिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद के उदघाटन समारोह में अपने अध्यक्षीय उदबोधन में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि एक तरफ जहां मीरांबाई ने मारवाड़ एवं मेवाड़ के यश को सूर्य की भांति प्रकाशमान किया है वहीं उन्होंने समाज की कुरीतियों एवं कुप्रथाओं के विरुद्ध लोक में जन चेतना जगाकर देश को एक नई दशा और दिशा प्रदान की। संगोष्ठी संयोजक डॉ.रामरतन लटियाल ने बताया कि ख्यातनाम कवि-आलोचक प्रोफेसर (डॉ) सत्यनारायण ने कहा कि मीरां बाई अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से पूरे विश्व को प्रभावित किया है। आज जब दुनिया स्त्री विमर्श की बात कर रहा है ऐसे में यह प्रश्न विचारणीय है कि आज से पांच सौ वर्ष पहले मीरां बाई नारी शक्ति के रूप में एक अनुपम उदाहरण है। निसंदेह कृष्ण को अपना आराध्य मानकर अपना जीवन व्यतीत करने वाली मीरां विश्व की एक सर्वश्रेष्ठ कवयित्री है जिनका राजस्थानी भाषा में लिखा भक्ति काव्य विश्व में अद्वितीय है। उदघाटन सत्र का संचालन संगोष्ठी संयोजक डॉ. रामरतन लटियाल ने किया।

साहित्यिक सत्र : राष्ट्रीय परिसंवाद के साहित्यिक सत्र प्रतिष्ठित कवि-आलोचक डॉ.गजेसिंह राजपुरोहित एवं डॉ.जगदीश गिरी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए जिसमें डॉ. रामरतन लटियाल ने मध्यकालीन काव्य परम्परा एवं मीरांबाई तथा डॉ.रीना मेनारिया ने राजस्थानी लोक मानस में मीरांबाई विषयक आलोचनात्मक शोधपत्र प्रस्तुत किये। इसी कड़ी में डॉ. सवाईसिंह महिया ने मीरांबाई की भक्ति साधना एवं श्यामसुन्दर सिखवाल ने इतिहास के उज्ज्वल उजास में मीरांबाई विषयक महत्वपूर्ण आलोचनात्मक शोधपत्र प्रस्तुत किए। डॉ.गजेसिंह राजपुरोहित ने कहा कि मीरांबाई का जीवन एक अबूझ पहेली है जिसे आज तक कोई भी सुलझा नहीं पाया मगर मीरांबाई के जीवन एवं सृजन पर नई दृष्टि से विचार करने की आवश्यकता है। डॉ.जगदीश गिरी ने कहा कि मध्यकालीन समय में देश अनेक महिला संत या कवयित्रियां हुई है मगर किसी भी कवयित्री पर मीरां जैसा ना तो सामाजिक दबाव था और ना ही साहस। मीरां का साहस अद्भुत था।